भूमिका

नाटक की कसौटी रंगमंच को माना गया है और ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। रंगमंच एक ऐसी प्रदर्शनकारी कला है जो मनोरंजन के साथ-साथ जीवन के विविध अनुभवों को रूपायित करते हुए दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती है। इसमें सभी ललित-कलाएं समन्वित हो जाती हैं। रंगमंच की परम्परा का इतिहास वैसे तो बहुत पुराना है, लेकिन हिंदी में इसकी शुरुआत लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले हुई और तब से लेकर अब तक हिंदी रंगमंच ने अपनी विकास-यात्रा के दौरान अनेक उपलब्धि प्राप्त की है। सर्जनात्मक रंग दृष्टि के परिणाम स्वरूप समकालीन हिंदी रंगमंच पर कहानी, उपन्यास, कविता जैसी साहित्यिक विधाओं के रंगमंचीय प्रयोग देखने को मिलते हैं। नुक्कड़ नाटक की लोकप्रियता बढ़ी है। इसने पश्चात्यनाट्य-परम्परा एवं चिंतन से प्रभाव ग्रहण किया। साथ ही आधुनिक जीवन की जटिलताओं, विसंगतियों, समस्याओं आदि को अभिव्यक्त करने के लिए भारतीय पारम्परिक एवं लोक-नाट्य परम्परा के उपयोग से अपनी जड़ों को भी समृद्ध करने का प्रयास किया है। इस कड़ी में हबीब तनवीर का योगदान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

हबीब तनवीर पर शोध कार्य करने के मुख्य रूप से दो कारण रहे। पहला, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. तथा एम.ए की पढ़ाई के दौरान रंगमंच विषय पढ़ते हुए इसमें मेरी दिलचस्पी बनी। दूसरा, वर्धा विश्वविद्यालय में एम.फिल. की उपाधि के लिए अपने गुरुजनों आदि के मार्गदर्शन के उपरांत 'हबीब तनवीर के नाटकों में लोकतत्व : नए रंग मुहावरे की तलाश' ('आगरा बाज़ार' और 'चरनदास चोर' के विशेष संदर्भ में) शोध विषय पर काम करने का निर्णय लिया। इस दौरान मुझे हबीब तनवीर के रंग व्यक्तित्व को समझने का मौका मिला। मुझे समझ आ गया कि हबीब तनवीर तो स्वयं ही एक 'टोटल थियेटर' की परिभाषा हैं

और उनका थियेटर अपनी ज़मीन से जुड़ा हुआ है। चूँकि एम.फिल. में मैंने हबीब तनवीर के केवल दो ही नाटकों का चयन किया था। इसलिए पीएच.डी. में हबीब तनवीर के सम्पूर्ण रंगकर्म को शोध का आधार बनाते हुए शोध निर्देशक के परामर्श से **'समकालीन हिंदी रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में हबीब तनवीर के रंग-प्रयोग'** शोध विषय को सहर्ष स्वीकार किया।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने पांच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय 'हबीब तनवीर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इसमें हबीब तनवीर के जन्म, परिवार, परिवेश, रूचि आदि पर बात करते हुए उनके संघर्ष, विचारधारा, सम्मान आदि पर प्रकाश डाला गया है। यह एक तरह से उनके व्यक्तित्व विकास की यात्रा है। कृतित्व पक्ष में हबीब तनवीर के प्रकाशित सभी नाटकों पर संक्षेप में चर्चा है। साथ ही उनकी प्रकाशित कविताओं, नज्मों, गजलों आदि को भी यहां स्थान दिया गया है।

दूसरा अध्याय 'समकालीन हिंदी रंगमंच : परम्परा और प्रयोग' है। इसमें रंगमंच शब्द के अर्थ, उसके स्वरूप, परम्परा पर चर्चा की गई है। इसमें समकालीन हिंदी रंगमंच की पृष्ठभूमि को बताते हुए हिंदी रंगमंच के विभिन्न पक्षों, प्रयोगों पर चर्चा है। समकालीन हिंदी रंगमच के संदर्भ में हबीब तनवीर की भूमिका पर चर्चा है। वास्तव में यह अध्याय हबीब तनवीर के रंगकर्म तक आने की एक कड़ी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है।

तीसरा अध्याय 'हबीब तनवीर के नाटकों की विवेचना' में हबीब तनवीर द्वारा लिखित, निर्देशित सभी नाटकों को चार उपशीर्षकों (बाल नाटक, मौलिक नाटक, लोककथाओं पर आधारित नाटक तथा अनुदित/ रूपांतरित नाटक) में रखते हुए उन पर विवेचात्मक चर्चा की गई है।

चौथा अध्याय 'हबीब तनवीर के नाटक : रंगमंचीय आयाम' में 'लोक' शब्द के अर्थ और परिभाषा को बताया गया तथा लोकतत्व की चर्चा करते हुए लोक कथा, लोक गाथा, लोक गीत, लोक भाषा आदि पर संक्षेप में बात की गई है। इसमें हबीब तनवीर द्वारा अपने नाटकों में प्रयुक्त छत्तीसगढ़ की विभिन्न लोक शैलियों (नाचा, पंथी नृत्य, पंडवानी, सुआ गीत, बांस गीत, राउत नाच आदि), रंग संगीत तथा रंगोपकरण पर चर्चा है। साथ ही हबीब तनवीर द्वारा अपने नाटकों में नाट्य रूढ़ियों के किये गए बहिष्कार के संदर्भ में भी चर्चा है।

शोध का पांचवा और अंतिम अध्याय 'हबीब तनवीर के नाटक : भाषा और शिल्प' है। इस अध्याय में हबीब तनवीर के नाटकों में भाषायी एवं शिल्पगत प्रयोग पर चर्चा है। भाषायी दृष्टि से हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ी बोली को प्राथमिकता दी है। साथ ही उनके नाटकों में उर्दू, अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। शिल्पगत दृष्टि से इसमें कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, गीत योजना पर प्रकाश है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के संबंध में यहां कुछ स्पष्टीकरण कर देना नितांत आवश्यक है। पहली बात, शोध विषय में प्रयुक्त 'समकालीन' शब्द को हिंदी आलोचना में प्रचलित रूढ़ अर्थ से नहीं लिया गया है, बल्कि उस समय से लिया गया है जब से हबीब तनवीर अपने रंगकर्म की शुरुआत करते हैं। चूँकि 50 के दशक से हबीब तनवीर रंगमंच पर सक्रिय हो चुके थे। अतः उस समय अवधि से हिंदी रंगमंच को देखते हुए हबीब तनवीर के रंग-प्रयोगों पर बात करना शोध विषय की मांग थी। यहाँ 'समकालीन' शब्द इस बात का भी सूचक है कि हिंदी का रंगमंच अपने समसामयिक सन्दर्भों से जुड़ा हुआ है तथा युग-विशेष के सन्दर्भों के अनुसार बदलती हुई चेतना या मानसिकता का भी द्योतक है।

दूसरा यह कि शोध-प्रबंध में आधार ग्रन्थ की श्रेणी में हबीब तनवीर के सभी प्रकाशित नाटक शामिल किये गए हैं। चूंकि शोध विषय हबीब तनवीर के रंग-प्रयोगों पर आधारित है। इसलिए शोध प्रबंध में हबीब तनवीर के उन नाटकों पर भी चर्चा है जो किसी कारण प्रकाशित नहीं हो सके। इन अप्रकाशित नाटकों के संदर्भ में जानकारी हबीब तनवीर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए व्यक्तियों से बातचीत तथा क्षेत्रीय कार्य के माध्यम से संकलित की गई है। तीसरा यह कि प्रस्तुत शोध प्रबंध में विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा क्षेत्र सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है और शोध सामग्री को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से संकलित किया गया है।